औद्योगीकरण
(INDUSTRIALIZATION)

मानव का प्रारम्भिक जीवन आखेट व फल-फूलों के संग्रह पर आधारित था। धीरे-धीरे उसने पशुपालन प्रारम्भ किया और पशुचारण युग में प्रवेश किया। प्रकृति को फलते-फूलते देखकर उसे कृषि की प्रेरणा मिली और उसने अनेक प्रकार की दालों, फलों, तिलहनों, कन्दमूलों एवं वस्तुओं का उत्पादन प्रारम्भ किया। कृषि से उत्पन्न वस्तुओं एवं खनिजों से उसने कुटीर व्यवसाय प्रारम्भ किए और साथ ही वह औद्योगिक युग में प्रविष्ट हुआ। प्रारम्भ में उद्योग मानव शक्ति एवं पशु के द्वारा संचालित थे, किन्तु जव जड़-शक्ति द्वारा संचालित मशीनों की सहायता से उत्पादन होने लगा तो उद्योगों में क्रान्ति आयी। वर्तमान औद्योगीकरण का जन्म औद्योगिक क्रान्ति का ही परिणाम है। औद्योगिक क्रान्ति से तात्पर्य उद्योगों में उन तीव्रगामी परिवर्तनों से है जो मशीनीकरण के कारण हुए। औद्योगीकरण की नींव इंगलैण्ड व अन्य यूरोपीय देशों में रखी गई और धीरे-धीरे यह विश्व के अन्य भागों में भी फैला।

18वीं तथा 19वीं सदी में ऐसे अनेक आविष्कार हुए जिनके कारण उत्पादन की परम्परागत प्रणाली में परिवर्तन हुआ। पहले कृषि कार्य हल की सहायता से पुराने तरीकों द्वारा किया जाता था एवं कुटीर उद्योगों में लकड़ी एवं लोहे के छोटे-छोटे औजारों द्वारा मानव शक्ति से उत्पादन किया जाता था, किन्तु अव मशीनों व जड़ शक्ति जैसे पैट्रोल कोयला, जल शक्ति और परमाणु शक्ति के द्वारा विशाल पैमाने पर तीव्र गति से उत्पादन होने लगा। इस औद्योगिक क्रान्ति का साथ यातायात वाहन के नवीन साधनों तथा मुद्रा प्रचलन ने दिया।

औद्योगीकरण का अर्थ
(MEANING OF INDUSTRIALIZATION)

औद्योगीकरण औद्योगिक क्रान्ति का प्रतिफल है। औद्योगीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें लघु एवं कुटीर उद्योगों का स्थान बड़े पैमाने के उद्योग ले लेते हैं। उद्योगों में जड़ शक्ति का प्रयोग किया जाता है और उत्पादन मशीनों की सहायता से होता है। ऐसी स्थिति में उत्पादन विशाल मात्रा में और तीव्र गति से होने लगता है।

विल्बर्ट मूर के अनुसार, "औद्योगीकरण का तात्पर्य आर्थिक उत्पादन के लिए शक्ति के निर्जीव साधनों का विस्तृत प्रयोग है, वह सब कुछ संगठन, यातायात एवं सन्देशवाहन, आदि के द्वारा उत्पन्न होता है।"[1]

संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार, "औद्योगीकरण से तात्पर्य बड़े-बड़े उद्योगों के विकास तथा छोटे और कुटीर उद्योग-धन्धों के स्थान पर बड़े पैमाने की मशीनों की व्यवस्था से है। औद्योगीकरण आर्थिक विकास की व्यापक प्रक्रिया का केवल अंग मात्र है जिसका उद्देश्य उत्पादन के साधनों की क्षमता में वृद्धि करके जन-जीवन के स्तर को ऊंचा उठाना है।"[2]

क्लार्क केर के अनुसार, "औद्योगीकरण का अभिप्राय एक ऐसी स्थिति से है, जिसमें पहले का कृषक अथवा व्यापारिक समाज एक प्रौद्योगिक समाज की दिशा में परिवर्तित होने लगता है।"

पी-कांग-चांग के अनुसार, "औद्योगीकरण से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जिसके अन्तर्गत उत्पादन कार्यों में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों में कुछ आधारभूत परिवर्तन वे हैं जिनका सम्वन्ध किसी उपक्रम

---

1 W. E. Moore, *Social Change*, pp. 91-92.
2 U. N. Report, *Process and Problems of Industrialization in Under-developed Countries*, p. 2.

Scanned with CamScanner

के यन्त्रीकरण से होता है तथा जिसके द्वारा किसी नवीन उद्योग की स्थापना, किसी नए वाजार की खोज और विस्तार दोनों ही वढ़ते हैं।''[1]

यूजीन स्टैनले के अनुसार, ''औद्योगीकरण का अर्थ फैक्ट्रियों, मिलों, खानों, शक्ति, संयन्त्रों, रेलवे, आदि निर्माण सम्वन्धी तथा घनिष्ठ रूप से सम्वन्धित क्रियाओं, विशेषकर उन क्रियाओं जिनसे आधुनिक वाह्य आर्थिक संरचना का निर्माण व संचालन होता हो, के महत्वपूर्ण सम्वन्धित विकास से है। इस अर्थ में आर्थिक विकास की व्यापक प्रक्रिया का विचार औद्योगीकरण में सम्मिलित है।

औद्योगीकरण शव्द का प्रयोग व्यापक एवं संकुचित दो अर्थों में हुआ है। संकुचित अर्थ में औद्योगीकरण से तात्पर्य निर्माता उद्योगों की स्थापना एवं विकास से है। इस अर्थ में औद्योगीकरण आर्थिक विकास की प्रक्रिया का ही एक भाग है जिसका उद्देश्य उत्पादन के साधनों की कुशलता में वृद्धि करके जीवन-स्तर को ऊंचा उठाना है।[2] व्यापक अर्थ में ''औद्योगीकरण के द्वारा देश की सम्पूर्ण आर्थिक संरचना को परिवर्तित किया जा सकता है।''[3]

औद्योगीकरण की विशेषताएं (Characteristics of Industrialization)

औद्योगीकरण को अधिक स्पष्टत: समझने हेतु यहां उसकी विशेषताओं का उल्लेख करेंगे :

(1) औद्योगीकरण का सम्वन्ध उत्पादन की प्रक्रिया से है।

(2) औद्योगीकरण के दौरान नवीन उद्योगों की स्थापना की जाती है।

(3) औद्योगीकरण में हाथ की अपेक्षा मशीनों द्वारा उत्पादन किया जाता है।

(4) औद्योगीकरण में मानव शक्ति के स्थान पर जड़ शक्ति, जैसे—कोयला, डीजल, जल-विद्युत, परमाणु शक्ति, आदि का प्रयोग किया जाता है।

(5) औद्योगीकरण में उत्पादन में श्रम-विभाजन एवं विशेषीकरण पाया जाता है।

(6) औद्योगीकरण में उत्पादन विशाल पैमाने पर तीव्रगति से होता है।

(7) औद्योगीकरण में वैज्ञानिक एवं तकनीकी पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है।

(8) औद्योगीकरण में प्राकृतिक स्रोतों का पूर्ण दोहन करने का प्रयत्न किया जाता है।

(9) औद्योगीकरण के दौरान आर्थिक विकास होता है, इसमें पूंजी का विकास एवं विस्तार सम्मिलित है।

(10) औद्योगीकरण में सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता उत्पन्न होती है जैसे कि मार्क्स का कहना है कि उत्पादन प्रणाली वदलने पर सामाजिक-आर्थिक ढांचे में भी परिवर्तन होता है।

(11) औद्योगीकरण के फलस्वरूप प्राचीन विश्वासों एवं मान्यताओं का ह्रास होता है।

(12) औद्योगीकरण के कारण नवीन वर्ग व्यवस्था (मजदूर एवं मालिक वर्ग) का उदय होता है।

(13) औद्योगीकरण वह प्रक्रिया है जिससे किसी देश में सम्पूर्ण आर्थिक कलेवर परिवर्तित किया जा सकता है।

भारत में औद्योगीकरण
(INDUSTRIALIZATION IN INDIA)

भारत में औद्योगीकरण का प्रारम्भ 1850 से माना जाता है जव पहली वार कपड़े के मिल की स्थापना की गयी। भारत में औद्योगीकरण को बढ़ावा देने का श्रेय अंग्रेजों को है, किन्तु यहां 20वीं शताब्दी और विशेष रूप से स्वतन्त्रता प्राप्ति के वाद ही उद्योगों का तेजी से विकास हुआ है। जहां प्रथम पंचवर्षीय योजना में उद्योगों के विकास पर 55 करोड़ रुपए खर्च किए गए वहां नौवीं पंचवर्षीय योजना में 47,589 करोड़ रुपए। जहां 1901 में भारत में 10.84 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या थी, वहां 1991 में यह प्रतिशत वढ़कर 25.7 तथा 2001 में 27.78 हो गया। भारत में 10 लाख से ऊपर जनसंख्या वाले नगरों की संख्या 1981 में 12 थी, वह बढ़कर 1991 में 23 तथा 2001 में 35 हो गयी। इसी प्रकार देश में औद्योगिक श्रमिकों एवं कारखानों की संख्या में भी तेजी से वृद्धि हुई है। भारत में 1991 की जनगणना के अनुसार जहां कार्यशील

1. Pei-Kang-Chang, *Agriculture and Industrialization*, p. 69.
2. U. N. Report, *Process and Problems of Industrialization in Under-developed Countries*, p. 3.
3. League of Nations, *Industrialization and Foreign Trade*, p. 30.

Scanned with CamScanner

जनसंख्या 3। करोड़ थी, वहीं 2001 में यह बढ़कर करीब 40.13 करोड़ हो गयी। ये सभी तथ्य भारत के औद्योगिक विकास को प्रकट करते हैं।

औद्योगीकरण एवं सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन
(INDUSTRIALIZATION AND SOCIAL-ECONOMIC CHANGES)

औद्योगीकरण के कारण होने वाले सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों का हम यहां उल्लेख करेंगे :

(1) **नगरीकरण**—औद्योगीकरण के कारण विशाल नगरों का विकास हुआ। जहां उद्योग स्थापित हो जाते हैं वहां कार्य करने के लिए गांव के अनेक लोग आकर वस जाते हैं और धीरे-धीरे वह स्थान औद्योगिक नगर का रूप ले लेता है।

(2) **यातायात के साधनों का विकास**—उद्योगों का जब यन्त्रीकरण हुआ तो उत्पादन की गति तीव्र हुई। कारखानों में कच्चे माल को तथा निर्मित माल को मण्डियों में पहुंचाने के लिए तीव्रगामी यातायात के साधनों की आवश्यकता महसूस हुई। परिणामस्वरूप रेल, मोटर, ट्रक, वायुयान, जहाज, आदि का आविष्कार हुआ। कच्ची एवं पक्की सड़कें वनीं और यातायात के साधनों का जाल विछ गया।

(3) **श्रम विभाजन एवं विशेषीकरण**—ग्रामीण कुटीर व्यवसायों में एक परिवार के व्यक्ति मिलकर ही सम्पूर्ण निर्माण की प्रक्रिया में हाथ वंटाते थे, किन्तु जव उत्पादन मशीनों की सहायता से होने लगा तो सम्पूर्ण उत्पादन प्रक्रिया को अनेक छोटे-छोटे भागों में बांट दिया गया। आलपिन का निर्माण भी अस्सी से अधिक छोटी-छोटी प्रक्रियाओं से होता है। इसी कारण श्रम-विभाजन का उदय हुआ। फिर एक व्यक्ति सम्पूर्ण उत्पादन प्रक्रिया के मात्र एक भाग को ही कर सकता था। उदाहरणार्थ, वस्त्र निर्माण में कुछ व्यक्ति धागा वनाने, तो कुछ वस्त्र वुनने और कुछ उन्हें रंगने के विशेषज्ञ होते हैं।

(4) **उत्पादन में वृद्धि**—औद्योगीकरण में श्रम-विभाजन एवं विशेपीकरण के कारण व मशीनों के प्रयोग से उत्पादन वड़े पैमाने पर तीव्र मात्रा में होने लगा। अधिक उत्पादन के कारण माल खपत के क्षेत्र में वृद्धि हुई, पूंजी में वृद्धि हुई, विदेशों में निर्यात बढ़ा और स्थानीय आवश्यकताओं के लिए ही नहीं वरन् विश्वव्यापी मांग के लिए उत्पादन होने लगा।

(5) **पूंजीवाद का जन्म**—औद्योगीकरण से पूर्व जीवनयापन का प्रमुख साधन कृपि एवं कुटीर व्यवसाय थे जो छोटे पैमाने पर होते थे जिनमें अधिक पूंजी की आवश्यकता नहीं होती थी। उत्पादन स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होता था तथा वस्तु-विनिमय प्रचलित था। भूमि ही सवसे वड़ी सम्पत्ति थी, किन्तु जब औद्योगीकरण हुआ तो सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन हुआ। कारखाना लगाने के लिए अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है, माल खरीदने एवं वेचने के लिए दलालों एवं एजेण्टों की आवश्यकता महसूस हुई। वस्तु-विनिमय का स्थान मुद्रा व्यवस्था ने ले लिया जिससे व्यापार करना सरल हो गया। मुद्रा का संग्रह करना भी आसान हुआ। जिसके पास पूंजी थी, उसने कारखाना लगाया। धीरे-धीरे पूंजी में वृद्धि हुई। श्रमिकों के श्रम का लाभ पूंजीपतियों को मिला। वे अधिक धनी बने और गरीव और गरीव होते गए। औद्योगीकरण ने ही पूंजीपति एवं मजदूर दो प्रमुख वर्गों को जन्म दिया।

(6) **उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद**—उद्योगों के लिए कच्चे माल की आवश्यकता एवं कारखानों में बने हुए माल को बेचने के लिए मण्डियों की आवश्यकता ने पूंजीवादी राष्ट्रों को पिछड़े राष्ट्रों में अपना साम्राज्य स्थापित करने एवं उन्हें अपना उपनिवेश बनाने के लिए प्रेरणा दी। यही कारण है कि अमरीका, इंग्लैण्ड, पुर्तगाल, फ्रांस, जर्मनी, आदि ने अफ्रीका व एशिया के कई देशों में अपने उपनिवेश स्थापित किए एवं वहां अपने साम्राज्य का प्रसार किया।

(7) **समाजवाद का उदय**—औद्योगीकरण ने पूंजीवाद को एवं पूंजीवाद ने अनेक वुराइयों को जन्म दिया। आर्थिक मन्दी व संकट बढ़े, गरीवी एवं अमीरी के वीच खाई पैदा हुई, पूंजीपतियों में एकाधिकार की प्रवृत्ति पनपी और मजदूरों का शोषण हुआ। मजदूरों ने अपने हक व हिस्से की मांग की। वे ऐसी व्यवस्था की मांग करने लगे जिसमें पूंजी का समान वितरण हो। समाजवाद गरीब व अमीर के वीच की खाई पाटना चाहता है, प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार एवं प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार (Each according to his capacity and each according to his need) के सिद्धान्त में विश्वास रखता है। इसके प्रमुख

Scanned with CamScanner

प्रवर्तक कार्ल मार्क्स हैं। आज सम्पूर्ण विश्व दो खेमों में बंटा हुआ है—एक पूंजीवादी जिसके अगुआ अमरीका व इंग्लैण्ड हैं, दूसरे साम्यवादी जिसके अगुआ रूस व चीन हैं।

(8) **अन्तर्राष्ट्रीयवाद**—औद्योगीकरण व यातायात के साधनों ने विभिन्न देशों की भौतिक दूरी को ही कम नहीं किया है वरन् उनके बीच व्याप्त सामाजिक, सांस्कृतिक व मानसिक भेदभाव को भी कम किया है। आज हम विश्व राज्य की कल्पना करने लगे हैं। राष्ट्रीयता के स्थान पर अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना पैदा हुई है। संयुक्त राष्ट्रसंघ हमारी इस भावना का प्रतीक है। आज विभिन्न देशों में आर्थिक निर्भरता वढ़ी है। आज एक देश में अकाल पड़ता है, वाढ़ और भूकम्प आता है, युद्ध होता है या महामारी फैलती है तो दूसरे देशों के लोग उसे सहायता पहुंचाते हैं। आज ऐसी अनेक संस्थाएं हैं जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कल्याण कार्य कर रही हैं जैसे—विश्व स्वास्थ्य संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, यूनेस्को, अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन, रेड क्रास सोसाइटी, आदि।

(9) **मजदूर समस्याओं एवं मजदूर संगठनों का जन्म**—औद्योगीकरण के कारण अनेक मजदूर समस्याओं ने जन्म लिया। मजदूरों के स्वास्थ्य की समस्या, काम के घण्टे, भर्ती की समस्या, शिक्षा, बीमा, चिकित्सा, मकान, बोनस, आदि से सम्बन्धित अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है। इन्हें हल करने के लिए उन्होंने मजदूर संगठनों का निर्माण किया। हड़ताल, तालाबन्दी, तोड़-फोड़, आगजनी, घेराव एवं हिंसात्मक उपद्रव होने लगे। कभी-कभी तो इन समस्याओं के उचित तरीके से समाधान नहीं होने पर मजदूरों द्वारा काम रोक दिया जाता है और इससे सम्पूर्ण आर्थिक जगत को हानि होती है। मजदूरों की समस्याओं को हल करने हेतु श्रम कल्याण योजनाएं बनायी गई हैं। कुटीर व्यवसाय से सम्बन्धित कोई श्रम समस्याएं नहीं थीं क्योंकि उनमें काम करने वाले एक ही परिवार व पड़ोस के व्यक्ति अथवा रिश्तेदार होते थे। उनमें परस्पर सहयोग और घनिष्ठ सम्बन्ध थे। अतः शोषण का प्रश्न ही नहीं था। सूर्योदय एवं सूर्यास्त होने के साथ-साथ काम के घण्टे तय होते थे, किन्तु औद्योगीकरण ने अनेक श्रम समस्याओं को जन्म दिया।

(10) **बेकारी**—उद्योगों में मशीनों ने मनुष्य का स्थान लिया। पहले जिस कार्य को 50 व्यक्ति पूरा करते थे, अब मशीनों की सहायता से केवल 10 व्यक्ति ही उसे पूरा कर लेते हैं। इस प्रकार 40 व्यक्ति वेकार हो जाते हैं। यही कारण है कि मशीनीकरण का विरोध होने लगा तथा मशीनें तोड़ी जाने लगीं। आज भी जब कभी उद्योगों में अभिनवीकरण (Rationalization) किया जाता है तो मजदूर लोग उसका विरोध करते हैं। अभिनवीकरण में ऐसी मशीनों का प्रयोग किया जाता है जिनसे कम श्रम से उत्पादन वढ़ता है तथा इससे मजदूरों की छंटनी होती है। भारत जैसे देश में, जहां पहले से ही वेकारी है, मशीनीकरण से और वेकारी पनपेगी। 1932 में मशीनीकरण के कारण इतना उत्पादन हुआ कि माल बाजारों में भर गया, कारखाने वन्द करने पड़े और उनमें लगे हुए अनेक श्रमिक वेकार हो गए।

(11) **कुटीर उद्योगों का ह्रास**—औद्योगीकरण से पूर्व उत्पादन कुटीर उद्योगों द्वारा होता था, किन्तु जब मशीनों की सहायता से उत्पादन होने लगा जो कि हाथ से बने माल की अपेक्षा सस्ता, सुन्दर, साफ व टिकाऊ होता था तो उसके सामने गृह उद्योग द्वारा निर्मित माल टिक नहीं सका। धीरे-धीरे कुटीर व्यवसाय समाप्त होने लगे और उनमें काम करने वाले तथा उनके मालिक कारखानों में श्रमिक के रूप में सम्मिलित हुए। कुटीर व्यवसायों में व्यक्ति को काम करने के बाद जो मानसिक आनन्द मिलता था, वह कारखानों से समाप्त हो गया। इसका कारण यह था कि अब यह सम्पूर्ण उत्पादन की मात्र एक छोटी-सी प्रक्रिया में ही भाग लेता था। इस प्रकार औद्योगीकरण से ग्रामीण एवं गृह-कला का ह्रास हुआ।

(12) **आर्थिक संकट व पराश्रितता**—उद्योगों में लाभ तभी होता है जब उत्पादन अधिक मात्रा में और तीव्र गति से हो। इसके अभाव में मिल मालिक कारखाने वन्द कर देते हैं, आर्थिक मन्दियां आती हैं, मजदूर बेकार हो जाते हैं, माल तो सस्ता होता है, लेकिन माल खरीदने के लिए लोगों के पास पैसा नहीं होता है।

औद्योगीकरण के कारण गांवों की आत्मनिर्भरता समाप्त हुई। एक गांव की दूसरे गांव पर ही नहीं वरन् एक राष्ट्र की दूसरे राष्ट्र पर निर्भरता बढ़ी। कच्चा माल खरीदने एवं बने हुए माल को वेचने के लिए दो देशों में समझौते हुए एवं पारस्परिक निर्भरता बढ़ी। आज एक देश के आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से दूसरे देशों का भी योगदान है। यदि अरब राष्ट्र भारत को तेल देना वन्द कर दें या अमरीका यूरेनियम देना बन्द कर दे तो भारत की अर्थव्यवस्था पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

Scanned with CamScanner

(13) **मकानों की समस्या**—उद्योगों में काम करने के लिए गांव से लोग नगरों में हजारों की संख्या में आते हैं। परिणामस्वरूप उनके निवास की समस्या पैदा होती है। नगरों में हवा व रोशनी वाले मकानों का अभाव रहता है। मकान महंगे होने के कारण कई व्यक्ति मिलकर एक ही कमरे में रहने लगते हैं। औद्योगिक केन्द्रों में मकान भीड़-भाड़युक्त, सीलन भरे एवं बीमारियों के घर होते हैं। औद्योगीकरण ने गन्दी बस्तियों की समस्या को भी जन्म दिया है।

(14) **स्वास्थ्य की समस्या**—अनेक कारखानों का वातावरण स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद होता है। कारखानों की गड़गड़ाहट वहरेपन को जन्म देती है। कपड़े के कारखाने तथा सोप स्टोन के कारखानों में काम करने वालों की आंखों एवं फेफड़ों में रुई के रेशे तथा मिट्टी का प्रवेश होता है। कारखानों का अस्वास्थ्यकर वातावरण क्षय रोग, अपच एवं अन्य वीमारियों को जन्म देता है। मिलों का धुंआ वायु प्रदूषण फैलाता है। औद्योगिक नगरों की भीड़-भाड़ व शोर स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद होती है।

(15) **दुर्घटनाओं में वृद्धि**—उद्योगों में चौवीसों घण्टे काम चलता रहता है। थोड़ी-सी असावधानी या थकान से निद्रा आने पर हाथ-पांव कटने व स्वयं को मृत्यु के मुख से धकेलने के अवसर होते हैं। सामान लाने-ले-जाने वाले ट्रकों, वसों एवं रेलों की दुर्घटनाएं आए दिन होती रहती हैं। इस प्रकार औद्योगीकरण ने दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ा दी है।

(16) **बैंक, बीमा एवं साख व्यवस्था का उदय**—उद्योगों को सुविधाएं देने, उनके लिए पूंजी जुटाने एवं माल की सुरक्षा के लिए वैंक, वीमा एवं साख व्यवस्था का उदय हुआ। आज हजारों लोग वैंकों एवं बीमा कार्यालय में काम करते हैं। उधारी से लेन-देन बढ़ा है। आज व्यक्ति अपने पद, हस्ताक्षर एवं मोहर से जाना जाने लगा है।

(17) **आर्थिक प्रतिस्पर्धा**—औद्योगीकरण ने आर्थिक प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया। एक कारखाने की दूसरे से व एक पूंजीपति की दूसरे पूंजीपति से गलाकाट प्रतियोगिता (Cut-throat Competition) होने लगी है। इस प्रतिस्पर्धा में अधिक पूंजी वाला कम पूंजी वाले के व्यवसाय को नष्ट कर देता है और अपना एकाधिकार स्थापित कर लेता है। एकाधिकार कायम होने पर वह माल को अपनी मनचाही कीमत पर वेचता है। वह वाजार से माल गायव करा देता है और महंगाई वढ़ जाती है।

(18) **औद्योगीकरण के सामाजिक प्रभाव** (Social Effects of Industrialization)—औद्योगीकरण ने मानव के सामाजिक जीवन में अनेक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं।

औद्योगीकरण के प्रमुख सामाजिक प्रभाव (Major Social Effects of Industrialization)

औद्योगीकरण के प्रमुख सामाजिक प्रभाव निम्न प्रकार हैं :

(क) सामुदायिक भावना का हास—ग्रामवासियों में 'हम' की भावना पायी जाती थी और वे परिवार, रक्त सम्बन्ध एवं समुदाय के लोगों से घनिष्ठ रूप से वंधे हुए थे। परस्पर सहयोग एवं प्रेम से जीवन व्यतीत करते थे एवं एक-दूसरे के सुख-दुःख में हाथ वंटाते थे, किन्तु औद्योगीकरण के कारण इन सम्वन्धों में शिथिलता आयी, अपरिचितता बढ़ी और व्यक्तिवादी प्रवृत्ति ने जोर पकड़ा तथा सामुदायिक भावना क्षीण हुई। मानव के सम्बन्धों का दायरा परिवार, जाति एवं गांव से वढ़कर सम्पूर्ण विश्व तक फैल गया।

(ख) सामाजिक नियन्त्रण का अभाव—ग्रामीण जीवन में व्यक्ति पर परिवार, जाति-पंचायत, ग्राम पंचायत, प्रथाओं एवं धर्म का नियन्त्रण था। औद्योगीकरण के कारण वड़े नगरों में यह सव असम्भव हो गया और नियन्त्रण के औपचारिक तरीकों जैसे कानून, पुलिस, न्यायालय, सरकार, आदि का सहारा लिया जाने लगा। नियन्त्रण के प्राथमिक तरीकों में जो शक्ति होती है, वह द्वैतीयक में नहीं। नियन्त्रण के अभाव के कारण ही औद्योगिक केन्द्रों में उच्छृंखलता दिखायी देती है।

(ग) व्यक्तिवाद को प्रोत्साहन—औद्योगीकरण ने व्यक्तिवाद को प्रोत्साहित किया। आर्थिक क्षेत्र में व्यक्तिवादी प्रवृत्ति के कारण एकाधिकार, गलाकाट प्रतियोगिता एवं पूंजीवाद का जन्म हुआ। व्यक्तिवाद व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर जोर देता है तथा वह सरकार एवं राज्य का हस्तक्षेप नहीं चाहता, किन्तु नियन्त्रण के अभाव में व्यक्ति में कई बुराइयां जन्म लेती हैं।

Scanned with CamScanner

(घ) सांस्कृतिक सम्पर्क—औद्योगीकरण के कारण ही यातायात एवं सन्देशवाहन के साधनों का विकास हुआ। नवीन साधनों ने विभिन्न संस्कृतियों के लोगों को नजदीक ला दिया, उनमें पारस्परिक समझ बढ़ी, पारस्परिक आदान-प्रदान हुआ, एक-दूसरे की फैशन, वस्त्र प्रणाली, धर्म, रीति-रिवाज, जीवन-विधि, आदि को अपनाना सम्भव हुआ। यही कारण है कि नगरों में जो औद्योगिक केन्द्र हैं, उनमें हम विभिन्न संस्कृतियों को साथ-साथ फलते-फूलते देख सकते हैं। यहां सांस्कृतिक वैमनस्य नहीं पाया जाता है।

(च) जाति प्रथा में परिवर्तन—एक ही उद्योग में विभिन्न जातियों के लोग साथ-साथ कार्य करने लगे, इससे विभिन्न जातियों में मेल-जोल बढ़ा तथा छुआछूत की भावना कम हुई। विभिन्न जातियों के व्यक्ति सहभोज में भाग लेने लगे। जातिगत पेशे में परिवर्तन हुआ, अन्तर्जातीय विवाह होने लगे और जातीय बन्धन शिथिल हुए। रेल, मोटर, वायुयान, होटल, रेस्टोरेण्ट, आदि के द्वारा विभिन्न जातियों के लोग और नजदीक आए और उनमें व्याप्त जातिगत भावना में कमी आयी।

(छ) सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि—औद्योगीकरण के कारण सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई। लोग अपने व्यवसाय, स्थान एवं विचारों में परिवर्तन करने लगे। रूढ़िवादिता एवं अन्धविश्वासों का स्थान तर्क ने ले लिया। यातायात की सुविधाओं ने लोगों को ग्राम से नगरों की ओर जाने की प्रेरणा दी।

(ज) सामाजिक विघटन एवं अपराध—औद्योगीकरण के कारण समाज-विरोधी कार्यों एवं अपराधों की वृद्धि हुई। नगरों में नियन्त्रण के अभाव में सामाजिक नियमों की अवहेलना की जाती है जिससे समाज में विघटनकारी प्रवृत्तियां प्रबल होती हैं। औद्योगिक केन्द्रों में वेश्यावृत्ति, शराबखोरी, जुआ, बाल अपराध, हत्याएं, आत्महत्या, चोरी, डकैती, गबन एवं अन्य अपराध व्यवहारों का बाहुल्य पाया जाता है। उन्हें हम अपराध के केन्द्र कह सकते हैं।

(झ) धर्म के प्रभाव में कमी—गांवों में धर्म व्यक्ति के व्यवहार पर नियन्त्रण रखता है। पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, पुनर्जन्म, कर्म एवं ईश्वर की धारणाओं में विश्वास के कारण व्यक्ति का जीवन वहां संयत होता है। वहां अध्यात्मवाद व्यक्ति को मानसिक शान्ति प्रदान करता है, किन्तु औद्योगीकरण ने नगरों को जन्म दिया, नवीन शिक्षा प्रणाली के विकास पर जोर दिया जो तर्क एवं वैज्ञानिकता पर आधारित है। मानव ने ईश्वर की सत्ता को चुनौती दी और धर्म का प्रभाव घटा। फलस्वरूप लोग शारीरिक सुख को अधिक महत्व देने लगे और मानसिक असन्तोष में वृद्धि हुई। नगरों में लोग ईश्वर की अपेक्षा कार्य तथा मशीन पर अधिक विश्वास करते हैं। नगरों में धार्मिक संकीर्णता का अभाव होता है और धार्मिक सहिष्णुता पायी जाती है।

(19) परिवार पर प्रभाव—औद्योगीकरण ने पारिवारिक जीवन को निम्न रूपों में प्रभावित किया है :

(क) संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ और उनके स्थान पर छोटे आकार वाले परिवारों में वृद्धि हुई। परिवार में वयोवृद्ध व्यक्ति के नियन्त्रण में शिथिलता आयी।

(ख) स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन हुआ—औद्योगिक नगरों में स्त्रियां शिक्षा प्राप्त कर धनोपार्जन करने लगीं। इससे उनकी पारिवारिक एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। इसी दौरान विवाह एवं परिवार से सम्बन्धित ऐसे अनेक सामाजिक विधान बने, जैसे—विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, विवाह-विच्छेद अधिनियम, बाल-विवाह निषेध अधिनियम, हिन्दू-स्त्री उत्तराधिकार अधिनियम, आदि जिनसे स्त्रियों को पुरुषों के समान सुविधाएं प्राप्त हुईं।

(ग) विवाह संस्था में भी अनेक परिवर्तन हुए—प्रेम विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, तलाक, आदि की संख्या में वृद्धि हुई, बाल-विवाहों की संख्या घटी एवं अधिक आयु में विवाह होने लगे। विवाह में माता-पिता एवं रिश्तेदारों के स्थान पर लड़के एवं लड़की की इच्छा को अधिक महत्व दिया जाने लगा। विवाह में धार्मिक कर्मकाण्डों में कमी आयी और अब वह सामाजिक समझौते का रूप ग्रहण करने लगा है।

(20) राजनीतिक प्रभाव—औद्योगीकरण के कारण देश में अनेक राजनीतिक एवं संसदीय सुधार हुए। राज्यों ने श्रमिकों की समस्याओं में रुचि दिखायी और उनके हितों की रक्षा के लिए अनेक श्रमिक कानून बनाए। श्रम कल्याण, सामाजिक सुरक्षा, काम का समय, वेतन, बोनस, भत्ता तथा भर्ती पद्धति, आदि को लेकर कई अधिनियम पारित किए गए ताकि श्रमिकों का शोषण न हो सके। दबाव समूहों के रूप में श्रम संघों का उदय हुआ। उनके प्रतिनिधि राज्य विधान सभाओं एवं संसद में जाने लगे। राज्यों ने स्वयं कई उद्योग स्थापित किए या कई उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर अपने कार्यक्षेत्र में वृद्धि की।

Scanned with CamScanner

(21) **व्यापारिक मनोरंजन**—औद्योगीकरण के कारण मनोरंजन का व्यापारीकरण हुआ। अनेक संस्थाएं आज मनोरंजन प्रदान करने का कार्य करती हैं। सिनेमा, क्लव, नाटक, टेलीविजन, रेडियो, आदि के संचालन में पर्याप्त मात्रा में पैसों की जरूरत होती है। ग्रामीण जीवन में मनोरंजन त्यौहारों व उत्सवों के अवसर पर होने वाले नृत्यों, भजनों, नाटक एवं ग्रामीण गीतों द्वारा मुफ्त उपलब्ध होता था, किन्तु आज इन सबके लिए काफी पैसा खर्च करना होता है।

औद्योगीकरण से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए यह आवश्यक है :

(i) नियोजित नगरों का निर्माण किया जाए जिनमें मानव जीवन से सम्बन्धित आवश्यकताओं की पूर्ति उचित प्रकार से की जाए।

(ii) जहां तक सम्भव हो, उद्योगों का विकेन्द्रीकरण किया जाए। बड़े-बड़े उद्योगों के स्थान पर छोटे-छोटे एवं गृह उद्योगों को महत्व दिया जाए।

(iii) श्रमिकों की समस्याओं को हल करने के लिए उनके हितों के लिए कानून एवं कल्याणकारी कदम उठाए जाएं।

(iv) उचित मनोरंजन की व्यवस्था की जाए ताकि औद्योगिक थकान से छुटकारा मिल सके।

Scanned with CamScanner